पाठ 12. निष्ठुर अनुकंपा

पाठ का परिचय

यह कहानी मनुष्य को कर्मठ बनने की सीख देती है। किसी शहर में एक कुलीन परिवार रहता था परंतु परिवार की धन-संपत्ति नष्ट हो चुकी थी। परिवार में चार भाई थे। चारों पढ़े-लिखे और हुनरमंद थे परंतु पुरानी खानदानी इज़्ज़त के कारण वे बाहर जाकर कोई नौकरी-चाकरी या काम-धंधा नहीं कर पाते थे। धीरे-धीरे घर की हालत इतनी खराब हो गई कि खाने के भी लाले पड़ने लगे। उनके घर के पास बगीचे में एक सहिजन का पेड़ था। रात के अँधेरे में वे उसकी फलियाँ तोड़कर सब्ज़ीवाली को बेच देते थे और उन्हीं पैसों से धीरे-धीरे गुजर-बसर करते रहते थे।

दीपावली के बाद उनका एक रिश्तेदार उनके घर आया। वह काफ़ी समय बाद आया था इसलिए उसे इस परिवार की बदहाली के बारे में नहीं पता था। उन लोगों ने उससे छिपाने की बहुत कोशिश की पर उसे पता लग गया। उसे बहुत अफ़सोस हुआ कि इतने होनहार लड़के और झूठी खानदानी इज़्ज़त के कारण कोई काम करने नहीं जाते, मामूली सहिजन के पेड़ के सहारे अपने दिन काट रहे हैं। वह बहुत दूरदर्शी था। रात में जब सब सो रहे थे तो उसने कुल्हाड़ी लेकर वह पेड़ काट दिया और वहाँ से चला गया। अब उन लोगों के पास कोई सहारा न रहा। उन्हें बहुत दुख हुआ पर काम करने के लिए निकलना पड़ा। सभी भाई प्रतिभावान थे। सबको अच्छे-अच्छे काम मिल गए और जल्दी ही घर की आर्थिक स्थिति ठीक हो गई। अगले साल वह मेहमान फिर आया और उसने स्वीकार किया कि उसने ही वह पेड़ काटा था। परंतु उसका उद्देश्य बुरा नहीं था। परिवार भी अब इस बात को समझ चुका था।

पाठ में निहित जीवन-मूल्य

इस पाठ के माध्यम से मनुष्य को कर्मशील बनने की प्रेरणा दी गई है तथा दिखावटी जीवन से दूर रहने के लिए कहा गया है।